Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, DEC-JAN, 2020, VOL- 8/37

उच्च प्राथमिक स्तर पर तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर लिंगभाव समानता का महत्व एवं उसका चिकित्सक परीक्षण

विजय चव्हाण, Ph. D.
सहा. प्रोफेसर, एस. एन. डी. टी. शिक्षाशास्त्र महाविद्यालय, पुणे
Email: chavan.vijay96@yahoo.com

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

हमारा भारत देश एक पारंपारिक देश है। यहाँ कही सालों से पुरुशप्रधान संस्कृति का महत्व रहा हैं । इन परंपराओं की पश्टी हमारे धर्मग्रंथों मे भी मिलती है, इस वजह से हमारे समाज में कही प्रकार के भेदभाव दिखायी देते है। लिंगभाव की समस्याँ इसी का एक कारण या मानसिकता का कारण माना जाता हैं। यह समस्याँ भारत में ही नही संपूर्ण विश्व की समस्याँ बनी है। इसका उच्चाट्न करना आज जरुरी है। मूलतः स्त्री/पुरुश एक ही सिक्के के दो पहलू माने जाते हैं। दोनों मे भेदभाव रखना अशिक्षा का तथा कर्मठता का कारण बन सकता है। स्त्री हमे ा उपेक्षा, निर्धनता तथा दया का कारण क्यों बनी है? इसके पीछे की धारणा क्या है? इसका पुरा इतिहास हमें परिचित है।

स्त्री सबला नही अबला है, देवता है, माँ है, दुर्गा है, लक्ष्मी है यह मानकर उसकी उपेक्षा करना यदी हमारी भूल हैं। स्त्री का उध्दार करने में जिस तरह कई महापुरुशों के प्रयत्नों का फल माना जाता हैं, उसमें राजाराम मोहन राय, महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले, महर्शी कर्वे, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर,महर्शी विठ्ठल रामजी शिंदे, ताराबाई शिंदे तथा भारतीय संविधान आदी का कार्य तथा हमारे आधुनिक विचार जो शिक्षा आयोग के द्वारा हमारे सामने आते है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग, कोठारी आयोग तथा 1986 का राश्ट्रीय शिक्षा आयोग में प्रत्यक्ष स्त्री पुरुश समानता का महत्व मूलभूत घटक के रुप में सामने आता है 2005 का राश्ट्रीय ढाचा और 2010 में लिंगभाव समानता के लिये किया गया प्रत्यक्ष प्रयोग जो क्रमिक पाठयपुस्तकों के रुप में स्त्री और पुरुश ने समानता लाने के लिये सामाने आता है, जिसका प्रतिफल आज समाज में लडकिंयों प्रति आस्था, आदर और प्रेम की भावना जिसका प्रचार और प्रसार दिखायी देता है। उद्देश एक ही है, स्त्री का उध्दार, और स्त्री–पुरुश में समानता लाना। 1901 में स्त्री साक्षरता का प्रमाण 0.60 प्रतिशत था, आज यह बढकर 45 प्रतिशत हो गया है। आकउे यह भी बताते हैं की, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, झारखंड, बिहार, दादरा हवेली आदी प्रदेशों ने लडकिंयों का साक्षरता का प्रमाण 45 प्रति ात से भी कम है, तथा संपूर्ण भारत में स्त्रीभृण हत्या का प्रमाण 875 के करीब है। शिक्षा ने 100 लडकियाँ महाविद्यालय स्तर तक पहूँची है, इससे यह प्रतित होता है की, स्त्री और पुरुशो में समानता का आज भी अभाव है। लेकिन समानता लाने के लिये प्रयास मात्र किये जा रहे हैं। 2017–18 की हिंदी विशय की कक्षा पाचवी

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

से नववी तक की, पाठयपुस्तक में लिंगभाव समानता का महत्व कितना है? यह जाने के लिये चिकित्सक परीक्षण किया गया है।

कक्षा 5 वी लेखक 9 वी तक की हिंदी पाठयपुस्तकों का चिकित्सक परीक्षण कर के स्त्री और पुरुश का प्रतिशत प्रमाण देखने का प्रयास किया गया है। यह प्रमाण 80 प्रति ात तक दिखाई देता है।

कक्षा 5 वी में मुखपृश्ठ पर लडका और लडकी एक दुसरे का स्वागत करते हुए दिखाई देते हैं। पढाई एक दुसरे के साथ तथा अकेले में देखाई देती है। साईकिल पर, खेलते हुए करो और जानो पाठ में लिंग भाव समानता दिखाई देती है। झुकझुक गाडी इसका मार्मिक उदाहरण है।

कक्षा 6 वी में पहली ईकाई में– पहचानों हमे इस पाठ में एक लडकी विज्ञापन दे रही है, ऐसा चित्र दिखाया गया है। सन सुन कर बोल इस पाठ में कुछ लडके और लडकियाँ पढाई कर रही है, ऐसा दृश्य है, एक लडका कमल मुंगफली खा रहा हैं, सभी बच्चे भाशांक को बधाई दे रहे हैं, इससे यह प्रतित होता है की, दोनों मे समानता दिखाई गयी है। काम करेंगे इस पाठ में लडकियाँ और लडके दोनों काम करते हुए आते हैं, काम के साथ साथ समानता का महत्व दिखाया गया हैं।

क्या करे लड्डू इस पाठ में बच्चें लड्डू के पीछे भाग रहे हैं, दादा और दादी दोनों के मनमें लड्डू खाने की इच्छा उत्पन्न हुई है, मतलब इसका यह है की, स्त्री और पुरुश दोनों मे लिंगभाव की दृश्टिसे समानता हैं। इसके प्रति हमार ध्यान पाठयपुस्तके द्वारा आकर्शित किया गया है।

कक्षा 7 वी किताब में खेल अनमोल हाथी चल्लम चल्लम आदी पाठों में लडका और लडकी में समानता पाने का उद्दश अधिकतर सफल होता हुआ दिखाई दे रहा है। गुन गुन कर बोल मेरी अभिलाशा, झुठा डर, पुस्तकालय, सुरक्षा, मेरे अपने, छात्रायल, सहायता, लोरी, स्वच्छता जहाज यात्रा, कागज, दोहे, खीर, धरती का स्वर्ग बनाना हैं । इन सभी पाठों ने किसी की मानसिकता चोट न पहूँचे यही दृश्टिकोन अपनाकर लिंगभावसमानता लाने का प्रयास किया हैं।

कक्षा आठवी की पाठयपुस्तके में मुखपृश्ठ पर एक लडका पठन कर रहा हैं और एक लडकी लेखन का कार्य कर रही है। इससे पढाई के प्रति निश्ठा का भाव दोनों ने दिख रहा हैं। मतलब, यहाँ पर भी लिंग भाव का महत्व स्पश्ट होता है। यह विचार समाज में स्त्री पुरुश समानता में दरार उत्पन्न न हो तथा आपसी समझोता, सोच विचार को परायें पन की भावना दोनों में न पनप जाये यही विचार किया गया हैं ।

नववी कक्षा कें भाई–बहन, कल्पना चावला आदि पाठो में लिंगभाव समानतायें हैं। सुभ्रदा कुमार चौहान, मिराबाई आदि रचनाकारों की रचना का भी समानता के लिये बडा महत्व है। इन सभी कक्षाओं में अध्यापन करते समय लिंगभाव समानता पाने हेतु अध्यापक लडकिंयों की प्रतिश्ठा को ठेंच न पहूँचा दे, जैसे की, लडके के लिए यह उदारण न दे जैसे की डरपोक लडकियों जैसा क्या हाथ में चुडियाँ पहनी है, लडकियों की तरह भारमा रहा हैं। भाौर्य का काम लडके ही करते है। स्कूल का चिराग लडका ही होता है, जिससे स्त्री–पुरुश विशमता के लिये हम ही जगह बना देते है। लडकीयों के लिये

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पुरुशी व्यक्तित्व, पुरुशी अहंकार, लडके की तरह हरकत न करो, लडकीयों चुप बैठो, लडकी पराया धन हैं। आदि उदाहरणों से आपस में भेदभाव, द्वेश उत्पन्न होगा और स्त्री–पुरुश समानता के लिये एक रुकावट उत्पन्न होगी ऐसा हमसे कोई प्रयास न हो । समाज को बराबर की राह पर खडा करने के लिये लिंगभाव समानता का होना आवश्यक है? यही कार्य आज पाठयपुस्तकें भी कर रहे हैं।

संदर्भ

20017–18 की कक्षा पाँचवीं से नववीं हिंदी विशय की पाठयपुस्तकें

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies